श्लोक नं॰ 1

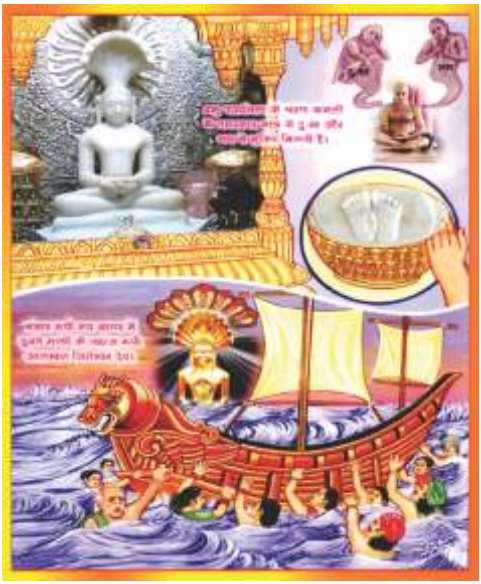

चरणों की विशेषता

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि
भीताभयप्रदमनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम्।
संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य॥1॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज – कहाँ गए चक्री...)

हे कल्याणधाम करुणाकर जिनवर अघहारी।
भव से भयाकुलित भक्तों को निर्भय करतारी॥
परम उदार प्रशंसनीय प्रभु पार्श्वनाथ जिनराज।
भवसमुद्र में पतित जनों के अनुपम आप जहाज॥
नाथ आपके चरण कमल में वन्दन करता हूँ।
निज आतम कल्याण हेतु अभिनन्दन करता हूँ॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥1॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं।

जितारातीन् जिनान् सर्वान्, मर्त्यदेवाधिपार्चितान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अर्द्ध ज्ञानोदय छन्द

1. कल्याणक मङ्गलमय जिन के, जगत हितङ्कर को वन्दन।
श्रद्धा भावों से करता हूँ, पार्श्वप्रभु का शुभ अर्चन॥ 1॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कल्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. ध्यान प्रभु का भक्तजनों के, सारे संकट हर लेता।
जो जिनवचन धरे उर में वह, आतम मुक्ती पा लेता॥ 2॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. 'णमो जिणाणं' कहकर पहले, पार्श्वप्रभु को नमन करूँ।
लक्ष्यभूत सिद्धालय को मैं, इक भव में ही गमन करूँ॥ 3॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. मन्द कषाय हुई प्रभु मेरी, विधान के शुभ भाव हुए।
पूजन करके लगा मुझे यों, आज प्रभु के दर्श हुए॥ 4॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. दिव्यशक्ति अनुभूत हो रही, नाथ आज भक्ति करके।
चैन मिलेगा प्रभु भक्त को, अक्षय मुक्तिवधू वर के॥ 5॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. रत्नत्रय का दिव्य खड्ग ले, अष्ट कर्म पर वार किया।
नाथ आपसा शिवपद पाऊँ, यही हृदय में धार लिया॥ 6॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. मुकुट झुक गए इन्द्रों के भी, नाथ आपके चरणों में।
मैं भी श्रद्धा से लाया हूँ, अर्घ्य चढ़ाने हाथों में॥ 7॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. दाता आप श्रेष्ठ इस जग में, करिए मुझको निज सम ही।
और नहीं कुछ चाहूँ तुमसे, सर्व प्रियङ्कर जिनवर जी॥ 8॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. रहिए मेरे लघु हृदय में, शाश्वत काल यही चाहूँ।
हीरा मोती धन औ दौलत, और नहीं कुछ भी मांगूँ ॥ 9॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. महा मनोहर रूप तिहारा, भव्य जनों के मन भाता।
एक बार जो दर्शन कर ले, बार-बार दर पर आता ॥ 10॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. वरी आपने मुक्तीरानी, सिद्धक्षेत्र राजे स्वामी।
अनुपम है चारित्र आपका, नमन करूँ अन्तर्यामी॥ 11॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. वाद्य बजे गूँजी शहनाई, जब प्रभुवर ने किया विहार।
चतुर्निकायी देव-देवियाँ, नभ से गाएँ मङ्गलाचार॥ 12॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. भेदज्ञान के बल से पाया, मुक्तीपुर का सुख साम्राज्य।
धन्य-धन्य हे पार्श्वप्रभु जी, भवदधि तारक परम जहाज॥ 13॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. दिशा रूप अम्बर धर प्रभु ने, अर्हत् पद को अपनाया।
अन्तिम शुक्लध्यान के द्वारा, शुद्ध सिद्धपद को पाया॥ 14॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. भीगा है अन्तर्मन उनका, जिनने प्रभु-वच श्रवण किया।
वचन सुधा पीकर भव्यों ने, शुद्धातम में रमण किया॥ 15॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. ताप कर्म का सहा न जाता, अतः शरण में आया हूँ।
भव सन्ताप मिटेगा निश्चित, भाव हृदय में लाया हूँ ॥ 16॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. भक्त आपको इकटक निरखे, छवि से नज़र नहीं हटती।
वीतराग जिनवर सी मूरत, जग में कहीं नहीं दिखती॥ 17॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. यति मुनि ऋषि अनगार आपका, हृदयकमल पर ध्यान धरें।
निजानुभव करके वे मुनिगण, निज आतम कल्याण करें॥ 18॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. प्रतिमा महा मनोहर जिनकी, पार्श्वप्रभु का क्या कहना।
भाव यही प्रभु संग शाश्वता, सिद्धालय में ही रहना॥ 19॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. दस अतिशय हों जन्म समय से, जैनागम यह कहता है।
अतिशयकारी पार्श्वप्रभु की, पूजन से दुख मिटता है॥ 20॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मन को परद्रव्यों में चेतन, बार-बार क्यों ले जाता।
प्रभु कहते इससे पल-भर भी, सच्चा सौख्य नहीं पाता॥ 21॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. निन्दित सारे कार्य छोड़कर, प्रथम प्रभु की पूजा कर।
गुरु कहते अनमोल मनुज भव, विषय भोग में व्यर्थ न कर॥ 22॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'निन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. दिव्याक्षत लेकर सुरपति भी, आया प्रभु अर्चन करने।
समवसरण का देख नज़ारा, हर्षित होता अति मन में॥ 23॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तपोवनी में प्रभुवर पहुँचे, तीस वर्ष की आयु में।
ब्रह्म स्वर्ग से लौकान्तिक सुर, आए दीक्षा उत्सव में॥ 24॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. महिमा प्रभु की शब्दों में क्या, कोई प्राणी बाँध सका।
बड़े-बड़े ज्ञानी सुरगुरु का, ज्ञान यहाँ पर थका रुका॥ 25॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. जिनाङ्घ्रि द्वय में श्रद्धा पूर्वक, शीश झुकाकर नमता हूँ।
पार्श्वप्रभु का विधान रचकर, अर्घ्य समर्पित करता हूँ॥ 26॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ङ्घ्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. परवश होकर कष्ट अनेकों, भोग-भोगकर आया हूँ।
दुर्लभता से आज दर्श कर, मन में अति हर्षाया हूँ॥ 27॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. पद्मं का शुभ अर्थ कमल मम, हृदयकमल पर आ जाओ।
सच्चा हूँ मैं भक्त आपका, दिव्य छवि प्रभु दर्शाओ॥ 28॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्मं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. संयोगज भावों से भगवन्, अनन्त कष्ट उठाता हूँ।
नाथ आपकी सन्निधि पाकर, अन्तर में सुख पाता हूँ॥ 29॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. सारभूत जो मोक्ष तत्त्व है, नाथ आपने प्राप्त किया।
जड़ कर्मों की लीला को प्रभु, आत्म शक्ति से नाश किया॥ 30॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. रचना कर दी समवसरण की, इन्द्राज्ञा से धनपति ने।
गन्धकुटी पर प्रभु को लखकर, भक्त रम रहे भक्ति में॥ 31॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. साध्य सिद्ध पद पाकर भगवन्, सिद्धालय में पहुँच गए।
भक्त आपके हम बेचारे, भव-अटवी में भटक रहे॥ 32॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. गणधर दस प्रभु पार्श्वनाथ के, वचन सुमन को गूँथ रहे।
महागुणी वे गणधर मुनि भी, प्रभु चरणों को पूज रहे॥ 33॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. रसना वश कर्मों को बाँधा, स्तुति करूँ अब रसना से।
अरज यही है नाथ आपसे, शीघ्र बचूँ भव भ्रमणा से॥ 34॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. निराकार होकर भी भगवन् , किञ्चित् न्यून तनाकृति है।
ज्ञान शरीरी पार्श्वप्रभु को, वन्दन मेरा नितप्रति है॥ 35॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. महानन्द का अनुभव करते, रहते स्वात्म चतुष्टय धाम।
तेईसवें तीर्थङ्कर प्रभु को, मेरा बारम्बार प्रणाम॥ 36॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. सज्ज[1] हुआ मैं जिन पूजन को, अष्ट द्रव्य ले आया हूँ।
मनवाञ्छित फल पाने भगवन्, शरण आपकी आया हूँ॥ 37॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज्ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. दया धर्म का मूल कहा है, पार्श्वनाथ तीर्थङ्कर ने।
औरों पर जो करें दया वे, सच्चा सुख पाते निज में॥ 38॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. शेष नहीं कुछ रहा आपके, पूर्णज्ञान में झलक रहा।
लोकालोक चराचर जाना, पाया केवलज्ञान महा॥ 39॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. षट् द्रव्यों को युगपत् जानें, फिर भी निज में मगन रहें।
धन्य-धन्य यह वीतरागता, त्रियोग से हम नमन करें॥ 40॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. जन्मान्तर में भी हे भगवन्, तुम मेरे स्वामी रहना।
पुण्याकर्षण में ना भटकूँ, अपने निकट मुझे रखना॥ 41॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. तैयार

42. तुलना योग्य नहीं हो प्रभुवर, उपमाओं से परे रहे।
अनुपम अक्षय अनन्त गुण हैं, शब्दों से ना जाएँ कहे॥ 42॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. पोषण करते भव्यजनों का, भवसागर के शोषक हो।
भूले भटके मोक्ष पथिक को, शिवपथ के उद्घोषक हो॥ 43॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. तापस ने भी प्रभु-वाणी सुन, मिथ्या तप को छोड़ दिया।
मिला जिसे सान्निध्य प्रभु का, भोगों से मुख मोड़ लिया॥ 44॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. यन्त्र-मन्त्र कुछ कर ना पाते, आयु पूर्ण हो जाने पर।
अतः करो मन से प्रभु भक्ति, कहते गुरु विद्यासागर॥ 45॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. माननीय प्रभु सकल विश्व में, सुर नर नाग नरेन्द्र नमें।
सकल गुणों के धारी प्रभु का, नाम निरन्तर भव्य जपें ॥ 46॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. नरेश अश्वसेन पितु जिनके, वामादेवी माता है।
पार्श्वप्रभु-सा सुत पाकर के, पाई अनुपम साता है॥ 47॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. महा यशस्वी महाप्रतापी, अष्ट कर्म रिपु नाश किए।
श्रद्धा से पूजन को आए, अष्ट द्रव्य का थाल लिए॥ 48॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. भिन्न जानकर जड़ चेतन को, निज स्वभाव में लीन हुए।
श्री सम्मेदशिखर पर स्वामी, त्रिविध कर्ममल क्षीण किए॥ 49॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. नयनों की टिमकार न होती, जब प्रभु छवि निरखते हैं।
मन मन्दिर की हृदय वेदि पर, तब प्रभु आप झलकते हैं॥ 50॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. गम्य नहीं प्रभु छद्मस्थों के, पूर्णज्ञान के गम्य प्रभो।
भरतक्षेत्र से करूँ अर्चना, स्वीकारो जगवन्द्य विभो॥ 51॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. जिनदर्शन कर निज दर्शन हो, अतः भक्ति से दर्शन कर।
जिन सम निज आतम पहचानो, कहते हैं पारस जिनवर॥ 52॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. नेत्र हुए सार्थक द्वय मेरे, आज दर्श जब हुआ प्रभो।
रत्नत्रय को धरूँ नाथ अब, सफल होय नर जन्म विभो॥ 53॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ने' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. नश्वर तन से दृष्टि हटाकर, चेतन पर दृष्टि रख दी ।
निज शुद्धातम से मैत्री कर, सिद्धिवल्लभा को वर ली॥ 54॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रहा न कोई कार्य शेष प्रभु, अतः आप कृतकृत्य हुए।
नाथ आपको पाकर लगता,आज भक्त धनि धन्य हुए॥ 55॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. रहस्य अरि रज का विनाश कर, नन्त चतुष्टय पाया है।
चैत्र कृष्ण की चतुर्दशी दिन, ज्ञान कल्याण मनाया है॥ 56॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

हे कल्याण धाम अघहारी, भक्तजनों को अभय करें।
चरणों में पूर्णार्घ्य चढ़ाकर, तीन योग से नमन करें॥ 1॥

ॐ ह्रीं श्रीं भवसमुद्रपतज्जन्तु तारणाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 2

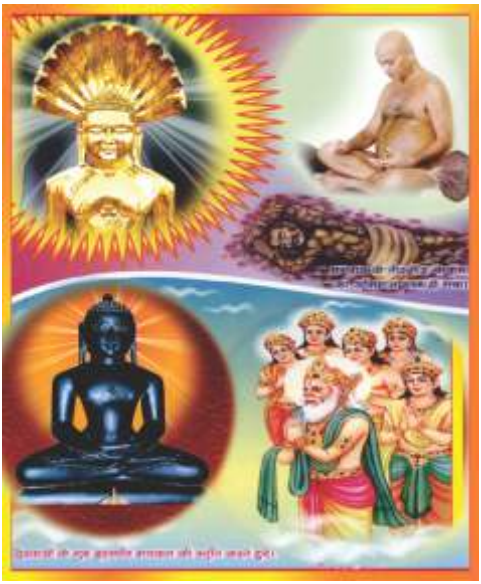

स्तुति की प्रतिज्ञा

यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतोस्-
तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये॥ 2॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज – कहाँ गए चक्री...)

अनुपम गुण गरिमा के सागर तव गुण नन्त विशाल।
सुरगुरु भी ना गा पाए हैं प्रभुवर की गुणमाल॥
क्रूर कमठ का मान भस्म करने को अग्नि समान।
ऐसे तेइसवें तीर्थङ्कर प्रभुवर गुण की खान॥
स्तुति करने की करूँ प्रतिज्ञा तव सन्मुख जिनराज।
लगन लगी शुद्धात्म तत्त्व की सफल करो सब काज॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥2॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं।

अवधिज्ञानसम्पन्नान्, जिनान् कर्मारिघातकान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं अवधिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

विष्णुपद छन्द

1. **यशोगान श्रद्धा से करते शब्द नहीं हैं पास।**
पार्श्वप्रभु जी भक्त हृदय में करिए शाश्वत वास॥ 57॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **अस्य-कस्य[1] करते-करते ही बीता काल अनन्त।**
निज स्वरूप का अनुभव करने द्वार खड़ा भगवन्त॥ 58॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **स्वभाव का प्रभु भान कराया किया नन्त उपकार।**
इसीलिए करते हैं भविजन प्रभु की जय-जयकार॥ 59॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **स्वयं ऊर्ध्व से मध्यलोक में आकर सुर पूजें।**
दशों दिशा में पार्श्वप्रभु के भक्ति-स्वर गूँजें॥ 60॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **सुगम नहीं है तीर्थङ्कर के मारग पर चलना।**
अति दुर्लभ है महाव्रती बन मोक्षरमा वरना॥ 61॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **रवि शशि से भी अधिक तेज है प्रभुवर के तन का।**
सारे जग में कोई नहीं है हे जिनवर तुम-सा॥ 62॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **गुणथानक से पार हुए प्रभु सिद्धालय पहुँचे।**
तीन लोक के अग्र भाग पर हो सबसे ऊँचे॥ 63॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. इसका किसका

8. गुरुर्ब्रह्मा शिव शङ्कर हैं भवि जीवों के नाथ।
जिनवर की क्या बात कहूँ मैं चरण नवाऊँ माथ॥ 64॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रुर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. गणनायक हो आप सभी ऋषि मुनियों के स्वामी।
मेरे मन के भाव सभी जानो अन्तर्यामी॥ 65॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. रिश्ता मेरा प्रभु आपसे बहुत पुराना है।
हर-पल सम्मुख रहना भगवन् लगे सुहाना है॥ 66॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. माम् पाहि हे पार्श्वप्रभु मेरी रक्षा करिए।
पाप कर्म से दुखी हुआ मेरे संकट हरिए॥ 67॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'माम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. बुद्धि काम नहीं करती प्रभु-गुणगण चिन्तन में।
नन्त गुणी प्रभु हूँ अबोध बस करता वन्दन मैं॥ 68॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. रात-दिवस बस लगा रहूँ प्रभुवर की भक्ति में।
भक्त चाहता मात्र यही बस जाऊँ मुक्ति में॥ 69॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. गुणराशेः गिन नहीं सकते आप नन्त गुण को।
अतः सुमर कर नाम मात्र ही वन्दूँ प्रभुवर को॥ 70॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शेः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. स्तोत्र आपका सभी भक्त जन का मन हरता है।
भक्ति करके पाप कर्म से भविजन डरता है॥ 71॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. वक्त्रं[1] प्रभु का निरख-निरख कर हृदय नहीं भरता।
और-और देखूँ प्रभु मुख को मन यह ही कहता॥ 72॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. मुख

17. सुत दारा धन धान्य विभव पापी को भी मिलते।
प्रभु-भक्ति पूजा का अवसर बड़भागी पाते॥ 73॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. विस्तृत समवसरण जिनवर का पाँच कोस का है।
सप्त तत्त्व का ज्ञान प्रभु-वचनों से मिलता है॥ 74॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'विस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तृषा क्षुधादिक दोष अठारह प्रभु ने नाश किए।
वीतराग प्रभु हितोपदेशी औ सर्वज्ञ हुए॥ 75॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. तप कल्याणक पौष वदी ग्यारस तिथि के दिन था।
सुर उपसर्ग विजेता प्रभु ने संयम धारा था॥ 76॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. ममता समता बन्ध और मुक्ति का कारण है।
पार्श्वप्रभु की दिव्यध्वनि निश्चित दुख-वारण है॥ 77॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तिर्यञ्चादिक तीन गति के जीव शरण आते।
प्रवचन सुनकर तत्त्व ज्ञान कर वे समकित पाते॥ 78॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तिर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. नख औ केश नहीं बढ़ते जब पूर्णज्ञान होता।
प्रभु के समवसरण में कोई दुख से ना रोता॥ 79॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. विवाद मिट जाते सब प्रभु के चरण जहाँ पड़ते।
वैर विरोध त्याग कर भविजन शिवपथ पर बढ़ते ॥ 80॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. प्रभुर्विधि बन्धन विमुक्त को त्रियोग से वन्दन।
तीन लोक के अधिपति भी करते हैं अभिनन्दन॥ 81॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भुर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. विजय प्राप्त कर कर्मों से सिद्धालय किया प्रवेश।
व्यर्थ अनेक विकल्पों में प्रभु मैं भ्रमता परदेश॥ 82॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. धागे का भी नहीं परिग्रह संग-मुक्त स्वामी।
इसीलिए तो आप हो गए मुक्तीपुर धामी॥ 83॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तुम्बी ज्यों निर्लेप तैरती पानी के ऊपर।
कर्म-मुक्त प्रभु आप विराजे सिद्धशिला ऊपर॥ 84॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तुम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तीर्थनाथ की करूँ अर्चना अष्ट द्रव्य लेकर।
नाथ आप ही पार कराओ अपार भवसागर॥ 85॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तीर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तीर्थेश्वर का अर्चन करते निकट भव्य प्राणी।
अतः करो निष्ठा से पूजन कहती गुरु-वाणी॥ 86॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थेश्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. वपु उत्तंग नव हाथ प्रभु की श्यामल छवि मोहे।
विश्वव्यापी पारसप्रभु पद में सर्प चिह्न सोहे॥ 87॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. रहूँ आपके निकट प्रतिपल यही कामना है।
निजात्म सुख बिन और प्रभु जी कोई चाह ना है॥ 88॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. उपास्य हो प्रभु आप हमारे उपासना करता।
दुर्लभता से दर्शन पाकर अब अर्चन करता॥ 89॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. कर्म काष्ठ को जला-जलाकर आतम शुद्ध किया।
ऐसे पार्श्वप्रभु को वन्दन करके सौख्य लिया॥ 90॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. महा भयङ्कर घोर-घोर प्रभु ने उपसर्ग सहे।
क्रूर कमठ के प्रति हृदय में करुणा स्रोत बहे॥ 91॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. ठगिनी माया ने पग-पग पर डाल रखा डेरा।
नाथ बताओ कब मिट जाए भव-भव का फेरा॥ 92॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ठ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. विस्मय होता क्षमा भाव से कर्म शत्रु जीते।
पाठ क्षमा का नाथ आपसे ही हम सब सीखे॥ 93॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. यतिपति भी तव चरण शरण में आकर नमते हैं।
जगत्पूज्य के वन्दन से भव बन्धन कटते हैं॥ 94॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. धूम्र रहित अग्नि सपने में देख रही माता।
तीर्थङ्कर-सा पूत प्राप्त कर पाती सुख-साता॥ 95॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. मन मन्दिर बन जाए ऐसी भक्ति करना है।
पापोदय में भी समतामय शक्ति रखना है॥ 96॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. केलि करते शुद्धातम में परमानन्द धरें।
पार्श्वप्रभु की दिव्यध्वनि में पावन अमिय झरे॥ 97॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'के' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. तोरणद्वार बँधे घर-घर जब करते प्रभु विहार।
अपलक निरखें पारस प्रभु को गाएँ मङ्गलाचार॥ 98॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. स्तवन करूँ कैसे शब्दों में अल्पमति हूँ मैं।
निष्ठा से निरखूँ बस धर लूँ प्रभु को आतम में॥ 99॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. स्याद्स्ति स्यात् नास्ति आदि सप्त भङ्ग होते।
अनेकान्त से सब विकल्प पलभर में ही धुलते॥ 100॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. हरदम है तैयार भक्त प्रभु के गुण गाने को।
भक्त पुकारे नाथ आपको हृदय बसाने को॥ 101॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मेरे-तेरे के फेरे में हुआ कर्म बन्धन।
बन्ध रहित हो जाने को प्रभु करता हूँ अर्चन॥ 102॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. षट् कालों में पार्श्वप्रभु जी चतुर्थ में जन्मे।
वीतराग हो आप प्रभु जी राग भरा हममें॥ 103॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. किस्मत वाले ही प्रभु का दुर्लभ दर्शन पाते।
एक बार जो दर्शन करते भूल नहीं पाते॥ 104॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. लगन लगी सिद्धालय में प्रभु दर्शन पाने की।
कैसे आकर अरज करूँ प्रभु मार्ग दिखाने की॥ 105॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. संवर और निर्जरा द्वारा मुक्ती को वर ली।
इसीलिए भक्तों ने भगवन् की भक्ति कर ली॥ 106॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. अस्त हो रहा ज्ञान रवि मम मोह निशा से नाथ।
मात्र सहायी आप हमारे झुका रहा मैं माथ॥ 107॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. वन्दनीय हो गई धरा वह मुक्ती जहाँ वरी।
गिरि शिखर पर भक्तजनों की लगती सदा झड़ी॥ 108॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. जैनं जयतु शासन प्रभु का शासन है पावन।
समीप आकर लगा मुझे बरसा अद्भुत सावन॥ 109॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. कमल समान सुकोमल मन हो यही भाव मेरे।
बहे ज्ञानधारा नित मुझमें मिटे कर्म फेरे॥ 110॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रिपु न कोई मित्र न कोई राग-द्वेष से दूर।
मेरे पार्श्वनाथ तीर्थङ्कर अनन्त गुण भरपूर॥ 111॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. अहं करिष्ये अहं करिष्ये मानी कहता है।
हुए आप कृतकृत्य आपको सब जग नमता है॥ 112॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष्ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

सुरगुरु भी असमर्थ पार्श्वजिन की स्तुति करने में।
अर्घ्य चढ़ाऊँ कमठ मान मर्दक प्रभु चरणों में॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीं अनन्तगुणाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं० 3

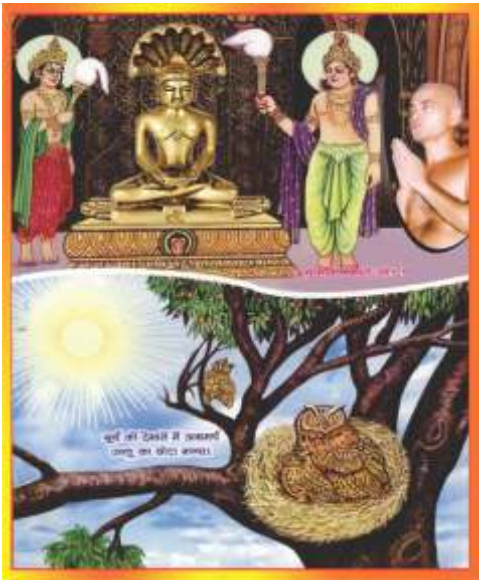

आचार्य की लघुता

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशाः कथमधीश! भवन्त्यधीशाः।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः॥ 3॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

ज्ञानावरण कर्म से मेरा ज्ञान ढका रहता।
तब प्रभु का प्रत्यक्ष दर्श गुण कैसे गा सकता॥
चंचल कौशिक शिशु जो दिन में अन्धा रहता है।
रवि का दिव्य रूप वर्णन वह क्या कर सकता है॥
हूँ असमर्थ जिनेश्वर मैं तव गुण को गाने में।
भक्त पुकारे देर न करना प्रभुवर आने में॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 3॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं।

परमावधिसंपन्नान्, जिनान् विश्वप्रदीपकान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमावधिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

सोरठा

1. **साध्य सिद्ध पद पाय, सिद्धालय में जा बसे।**
भक्त शरण में आय, सिद्धि के साधन तुम्हीं॥ 113॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **माला फेरूँ नित्य, पार्श्वप्रभु के नाम की।**
आतम होय पवित्र, पाप कर्म का नाश हो॥ 114॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **धन्य हुआ मैं आज, नाथ आपको पूज कर।**
हुए सफल सब काज, जिनपूजा सम पुण्य ना॥ 115॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **तोल-तोल कर बोल, कहते हैं यह जिनवचन।**
अन्तर के पट खोल, नरभव को सार्थक करो॥ 116॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **देवोऽपि यहाँ आय, स्वर्गों को भी छोड़कर।**
पूजन कर हर्षाय, दिव्य द्रव्य भर थाल ले॥ 117॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **तण्डुल चरण चढ़ाय, अक्षय पद का लक्ष्य है।**
दुर्लभ शरणा पाय, अहो भाग्य है आज मम॥ 118॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **वचन अगोचर आप, कैसे मैं भक्ति करूँ।**
करो मुझे निष्पाप, पूर्णज्ञान से देख लूँ॥ 119॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. वर्धमान चारित्र, पूर्व काल में प्राप्त कर।
काटे कर्म विचित्र, निष्कर्मा प्रभु हो गए॥ 120॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. णमोकार का जाप, मन को शाश्वत शान्ति दे।
मिट जाता सब पाप, सुमरन कर सुख पा रहा॥ 121॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. क्षायिक लब्धि पाय, अजर-अमर प्रभु हो गए।
क्षायिक भाव सुहाय, इसीलिए पूजन करूँ॥ 122॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. तुंग शिखर में श्रेष्ठ, स्वर्णभद्र इक कूट है।
भव्य जनों को इष्ट, गिरि शिखर की वन्दना॥ 123॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तुं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. स्वयं हुए निज लीन, दृष्टि हटा परद्रव्य से।
सर्व विकार विलीन, स्वानुभूति का फल यही॥ 124॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. रूपातीत विदेह, लक्ष्यभूत पद पा लिया।
प्रभु गुण से कर नेह, पाना है शिवपद मुझे॥ 125॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. पद में सर्व महान्, सिद्ध शुद्ध पद ही रहा।
प्रभु को करूँ प्रणाम, क्योंकि सिद्ध पद पा गए॥ 126॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. मस्त हुआ मन आज, करके भक्ति आपकी।
श्रद्धा का है साज, भक्त हृदय में बज रहा॥ 127॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. मान्य जगत में नाथ, इक जिनशासन आपका।
रहो हृदय के पास, चलूँ आपके मार्ग पर॥ 128॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. दृष्टि स्व सम्मुख होय, यही प्रार्थना आपसे।
जग में और न कोय, जिससे अरजी कर सकूँ॥ 129॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. ईशाः त्रिजग ईश, सुर नर अहिपति भी नमें।
पार्श्वप्रभु जगदीश, मुझे शरण में लीजिए॥ 130॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. कल्पतरु से श्रेष्ठ, मनवाञ्छित दाता तुम्हीं।
अनेक में प्रभु एक, अनुपम आप महान हो॥ 131॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. थर-थर काँपे कर्म, प्रभु भक्ति प्रभु ध्यान से।
वीतराग जिनधर्म, कर्म नाश का हेतु है॥ 132॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मल मूत्रादिक मुक्त, जन्मातिशय आपका।
चौंतिस अतिशय युक्त, पार्श्वप्रभु तीर्थङ्करा॥ 133॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. धीर वीर गम्भीर, समता से भरपूर हो।
पहुँच गए भव तीर, दिखलादो भव तट मुझे॥ 134॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. शरीर को भी छोड़, अशरीरी प्रभु हो गए।
निज से नाता जोड़, अष्टम भू में जा बसे॥ 135॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. भले आप हो दूर, लोक अग्र पर शाश्वता।
भक्ति मम भरपूर, हृदयकमल पर आ बसो॥ 136॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वंश आपका उग्र, किन्तु शान्त हो सौम्य जिन।
करके मन एकाग्र, परमातम पद पा लिया॥ 137॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. नित्य करे जो दर्श, जिन से निज का दर्श हो।
कर निजात्म का स्पर्श, शाश्वत शिव सम्राट् हो॥ 138॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. धीरज धर कर आप, सहज भाव निर्मल किए।
मिटा कर्म सन्ताप, पहुँचे चिन्मय देश में॥ 139॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. धीशाः ज्ञान महान, सद्बुद्धि दाता तुम्हीं।
भविजन कर तव ध्यान, ध्येय तत्त्व को प्राप्त हो॥ 140॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. धृष्ट हुआ यह भक्त, बिन बुद्धि गुण गा रहा।
भक्ति से आसक्त, प्रभु बिन कुछ सूझे नहीं॥ 141॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धृष्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. टोंक प्रभु की दूर, करूँ वन्दना भाव से।
सब विकार हो चूर, यही आपसे अरज है॥ 142॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'टो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. देहतोऽपि प्रभु मुक्त, परम शुद्ध ही हो गए।
अनन्त गुण संयुक्त, केवलि जिन के गम्य हो॥ 143॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. कौन करे गुणगान, पूर्ण रूप से आपका।
हारे सब विद्वान्, असीम गुणधर आप हो॥ 144॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. शिखर सम्मेद महान, तीर्थ अनादिकाल से।
गए नन्त शिवधाम, इसी धरा से ध्यान धर॥ 145॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. कर्म कमठ को जीत, ज्ञान शरीरी हो गए।
साधक की यह रीत, साध्यभूत पद प्राप्त हो॥ 146॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. शिविका विमला बैठ, अश्व-वनी में प्रभु गए।
गहन ध्यान में पैठ, शुद्धातम को पा लिया॥ 147॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. शिशुर्भक्त जिनराज, खड़ा आपके द्वार पर।
पाने शिव साम्राज्य, नश्वर कुछ चाहूँ नहीं॥ 148॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शुः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. यत्न हुए सब पूर्ण, शेष नहीं कुछ भी रहा।
पाप कर्म हो चूर्ण, यही कामना मम प्रभो॥ 149॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. दिव्योत्सव कर देव, हर्षित होते हृदय से।
पूजूँ मैं अतएव, मन में हो आनन्द अति॥ 150॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. वाराणसी सु-देश, जहाँ प्रभु ने जन्म लिया।
पाऊँ चिन्मय देश, यही भक्त की अरज है॥ 151॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. दिखे नहीं जिनराज, आगम से लख पूजता।
भक्तों के सरताज, तीन योग से मैं नमूँ॥ 152॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. ध्वान्त मिटाकर सर्व, ज्ञान उजाला पा लिया।
अनुभव कर शिव शर्म,सफल किया नरभव प्रभो॥ 153॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. धोया स्वातम तत्त्व, समता पावन नीर से।
पाया मोक्ष सु-तत्त्व, सिद्धालय में जा बसे॥ 154॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. रूपातीत स्वभाव, किया स्वानुभव आपने।
करके नाश विभाव, निजातमा में रम गए॥ 155॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. पंचमुष्टि कचलोंच, किया प्रभु जी आपने।
मैं हूँ अति कमजोर, आत्म शक्ति प्रकटाईए॥ 156॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. प्रमाद करके नाथ, काल अनन्त गँवा चुका।
देना इतना साथ, स्वतन्त्र हो पथ पर चलूँ॥ 157॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. रूप मनोज्ञ जिनाय, दर्शन कर अति सौख्य हो।
साँवलिया जिनराय, त्रिभुवन में जयवन्त हो॥ 158॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. परमौदारिक देह, पाई प्रभु जी आपने।
पद्मावती-धरणेन्द्र, आकर तव भक्ति करें॥ 159॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. यत्र-तत्र सर्वत्र, पूर्णज्ञान से व्याप्त हैं।
आओ-आओ अत्र, मेरे हृदय पधारिए॥ 160॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तिष्ठ-तिष्ठ जिनराज, मम मन मन्दिर ठहरिए।
रहिए शाश्वत काल, यही प्रार्थना आपसे॥ 161॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. किंचित्-सी भी चाह, चउ गति दुख का हेतु है।
कहते यह जिनराय, चाह-आह से मैं बचूँ॥ 162॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'किं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. किए अनन्तों बार, जनम-मरण मैंने प्रभो।
आया हूँ अब द्वार, मिटा सकूँ भव का भ्रमण॥ 163॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. लगी लगन हे नाथ, करूँ नित्य आराधना।
होय असाता नाश, ऐसी भक्ति कर सकूँ ॥ 164॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. संघर्ष सहें घोर, अन्तिम सुख शाश्वत मिला।
कर जिन-दर्श विभोर, मेरा आतम हो गया॥ 165॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'घर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. मन तन रहित जिनेश, विधान रचकर आपका।
भक्ति करूँ हमेश, यही भावना भक्त की॥ 166॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रश्मि रवि की तेज, आग उगलती-सी लगे।
प्रभु की शरणा नेक, मिलती अनुपम शान्ति है॥ 167॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रश्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. रश्मेः अनन्त धार, ज्ञानसूर्य किरणों सहित।
जाने सर्व अपार, पूर्णज्ञान महिमा अगम॥ 168॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मेः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

दिवान्ध रवि का रूप, वर्णन कर सकता नहीं।
अगम्य आप स्वरूप, अर्घ्य चढ़ाता हूँ चरण॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं अनन्तगुणाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 4

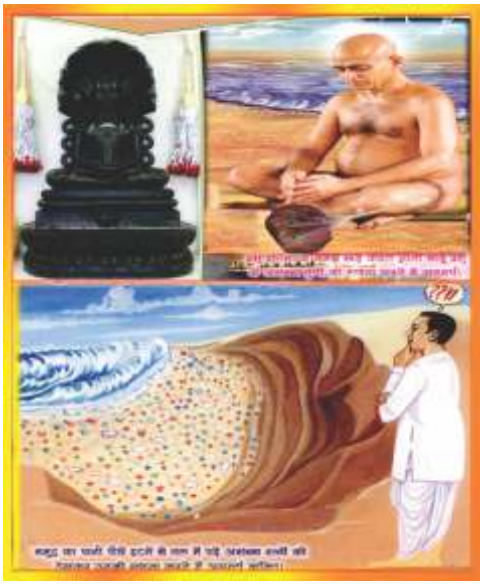

गुण वर्णन में असमर्थता

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत।
कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मान्-
मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः॥ 4॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज – कहाँ गए चक्री...)

दर्शनमोह नाश होने से प्रभु गुण जान रहे।
किन्तु नन्त गुण गिनने में वह भी असमर्थ रहे॥
प्रलयकाल की प्रबल हवाएँ तेजी से बहतीं।
जल बह जाने से सागर में रत्नराशि दिखती॥
रत्नाकर के बहु रत्नों की गिनती कौन करे।
उसी भाँति तव गुण गणना में भविजन मौन रहे॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 4॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं।

जिनान् सर्वावधीनर्च्यान्, घात्यरातिक्षयङ्करान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वावधिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

चौपाई

1. **मो**हान्तक कहलाते स्वामी, महामोक्ष पद के अधिगामी।
नाम आपका नित्य जपूँ मैं, चरण-कमल में नित्य नमूँ मैं॥ 169॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **ह**जार नयन किए सुरपति ने, बालप्रभु लख हर्षित मन में।
कोटि दिवाकर सम आभा है, श्यामल तन की दिव्य प्रभा है॥ 170॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **क्ष**मा आदि दस धर्म धुरन्धर, शीश नवाते इन्द्र पुरन्दर।
अति तेजस्वी वदन तुम्हारा, सुन्दर अपलक देखनहारा॥ 171॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **या**त्रा कर सम्मेद शिखर की, स्वर्णभद्र पावन भू-धर की।
पल में सब थकान मिट जाती,अद्भुत आत्म शान्ति मिल जाती॥ 172॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **द**या क्षमा करुणा के सागर, दीप्तिमान गुणखान दिवाकर।
मङ्गलकारी दर्श तिहारा, सर्व अमङ्गल हरने वाला॥ 173॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **नु**पुर बाँधकर नाचे सुरियाँ, देख प्रभु को हरषे अँखियाँ।
कोटि-कोटि हे नाथ नमोऽस्तु,भव दुखहारक तुम्हें नमोऽस्तु॥ 174॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **भ**व-भव भटका मारा-मारा, अपने कृत कर्मों से हारा।
सब विकारमय व्याधि नशाने, आया भगवन् अर्घ्य चढ़ाने॥ 175॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. वन्दन किया न शुभ भावों से, पूजा करी न त्रय योगों से।
इसीलिए दुख ही दुख पाया, पुण्य योग से तव दर आया॥ 176॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. नयनों को अभिराम लगी है, तव मूरत लख चाह जगी है।
रत्नत्रय का दीप जलेगा, निज आतम का पता मिलेगा॥ 177॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. पिता जगत के आप निराले, भक्त वत्स के आप सहारे।
खोई आत्म निधि दिखलाते, अनन्त उपकारी कहलाते॥ 178॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. नाम आपका जो उच्चारे, वह अपनी तकदीर सँवारे।
चरित आपका जो पढ़ता है, सुख मारग पर वह बढ़ता है॥ 179॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. थर्राता है अब मन मेरा, सुमरन कर भव दुख का घेरा।
पार्श्वप्रभु को हम पूजेंगे, आगामी अब कष्ट मिटेंगे॥ 180॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. मर्त्य लोक से सिद्ध हुए हो, सिद्धालय पर राज रहे हो।
पार्श्वनाथ वन्दूँ जगनामी, अर्घ्य चढ़ाऊँ अन्तर्यामी॥ 181॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. नित्योद्घाटित ज्ञान तिहारा, सर्व चराचर जाननहारा।
पूर्णज्ञान रवि उदित हुआ है, आरति कर मन मुदित हुआ है॥ 182॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. नूतन स्वर्ण कमल सुर रचते, मुख्य कमल पर प्रभु पग रखते।
चउ अङ्गुल ऊपर ही चलते, विहार में सुर-नर मुनि नमते॥ 183॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. मौनं सुख शान्ति का दाता, अधिक बोलकर मिले न साता।
अतः कहो नित नपा तुला ही, ऐसा समझाते गुरुरायी॥ 184॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. गुणग्राही विनयी होता है, अपने अघ मल को धोता है।
पर के दोष नहीं मैं देखूँ, अपने दोष स्वयं अवलोकूँ॥ 185॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. गणान् चतुर्विध धारक स्वामी, ऋषि यति मुनि अनगार सु-नामी।
हे पारस जिन पूज्य हमारे, श्रद्धा से बोलूँ जयकारे॥ 186॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. गरिमामय व्यक्तित्व तिहारा, वीतराग छवि दिव्य नजारा।
हितोपदेशी मृदुतम वाणी, सुनकर सुख पाता हर प्राणी॥ 187॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. 'णमो रिसीणं' कह जो वन्दे, अपने सारे दुष्कृत खण्डे।
मेरे नयन दरश के प्यासे, प्रभु ही मेरी प्यास विनाशे॥ 188॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. अयि चेतन! अब तो तुम चेतो, भोर भई अब तो तुम जागो।
प्रभु कहते ना समय गँवाओ, निजानुभव कर निज सुख पाओ॥ 189॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तुम्हीं प्रभु जी मात हमारे, तुम्हीं प्रभु जी पितु हमारे।
नाथ आप सर्वस्व हमारे, हम भक्तों को जिनवर तारे॥ 190॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तुम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. नत मस्तक हूँ तव चरणों में, छवि बसी मम द्वय नयनों में।
जयवन्तों श्री पार्श्वप्रभु जी, शरणा दो यह अर्ज भक्त की॥ 191॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तमहर रूप स्वरूप तुम्हारा, जगत जनों से है अति न्यारा।
मोह तमस मेरा क्षय करना, नाथ मुझे भी मुक्ती वरना॥ 192॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वरिष्ठ हो प्रभु समवसरण में, बारह सभा नमें चरणन में।
पार्श्वप्रभु कब दर्शन दोगे, निज समान मुझको कर लोगे॥ 193॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. क्षम्य किया जब कमठ अरि को, शीश झुकाया उसने प्रभु को।
क्रोध भावना हार गई है, क्षमा भाव की जीत हुई है॥ 194॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. मेरा-तेरा करते-करते, भव-अटवी में गिरते पड़ते।
कष्ट अनेक उठाए स्वामी, संकट दूर करो सुखधामी॥ 195॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तत्पर रहता प्रभु पूजन को, भक्त सदा प्रभुवर दर्शन को।
कहीं न मन लगता जिनराई, तुम बिन शान्ति कहीं ना पाई॥ 196॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. कल्मष सारे धुल जाते हैं, श्रद्धा से दर्शन पाते हैं।
अष्ट द्रव्य ले करूँ अर्चना, मुझको भवदधि पार उतरना॥ 197॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कल्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. पान्तु रक्षा आप करोगे, मेरे सब दुष्कर्म हरोगे।
यही भाव लेकर आया हूँ, मन में श्रद्धा भर लाया हूँ॥ 198॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. तपोगुणी से कर्म काँपते, ध्यान लीन लख शीघ्र भागते।
मैं भी कर्म काटने आया, निष्ठा अर्घ्य हृदय में लाया॥ 199॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. वांछित फल वे पा जाते हैं, जो प्रभु को मन से ध्याते हैं।
पाकर नाथ आपका शरणा, जन्म-मरण अब मुझे न करना॥ 200॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. तथ्यभूत कुछ ना इस जग में, सारभूत सुख प्रभु के मग में।
मार्ग आपका ही मन भाता, इसीलिए प्रभु पूज रचाता॥ 201॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. पदार्थ सारे प्रभु ने जाने, कहें प्रभु जो वह हम माने।
जिनवच का श्रद्धान करेंगे, सिद्धिवल्लभा शीघ्र वरेंगे॥ 202॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. यम भी नाथ आपसे हारा, भाग गया डर कर बेचारा।
मृत्यु का भी मरण कराया, अठरह दोष रहित जिनराया॥ 203॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. नभसः दिव्य सुमन बरसाते, सुरगण मन में अति हर्षाते।
जब तीर्थङ्कर विहार करते, सर्व देव जय-जय उच्चरते॥ 204॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. प्रकृति भी तब मुस्काती है, जब प्रभु का स्पर्शन पाती है।
पवन तभी अति इठलाती है, हौले-हौले लहराती है॥ 205॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. कठोर परीषह जय करते हैं, मोह भाव का क्षय करते हैं।
सोलहकारण भाव करे हैं, तब तीर्थङ्कर पद धारे हैं॥ 206॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. टोली बना-बनाकर आते, ताल बजाकर प्रभु गुण गाते।
सुरगण प्रभु भक्ति में खोते, बीज मोक्ष तरु के वे बोते॥ 207॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'टो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. दृष्टोऽपि मन नहीं भरता है, मम मन तव पद में रहता है।
या तो मेरे हृदय समाओ, या चरणों में मुझे बुलाओ॥ 208॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. यस्य हृदय में आप बसे हैं, उनके सारे विघ्न नशे हैं।
मुझे चरण में जगह दीजिए, भवसागर से पार कीजिए॥ 209॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. मान्य आप त्रिभुवन में स्वामी, वचनामृत सुनते भवि प्राणी।
चन्दन से भी अति शीतल हैं, दिव्य वचन सुन लूँ प्रतिपल मैं॥ 210॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. मीन नीर बिन ज्यों दुख पाती, भक्त चेतना त्यों तड़पाती।
प्रभु तुम बिन दुख ही दुख पाए, दुर्लभता से अब दर आए॥ 211॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. ये जितने रिश्ते नाते हैं, रति करके दुख ही पाते हैं।
अतः आपसे रिश्ता जोड़ा, झूठी दुनिया से मुख मोड़ा॥ 212॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तरुण दशा में विरागधारी, तजकर सर्व संग दुखकारी।
मन को थिर कर ध्यान लगाया, घाति कर्म को दूर भगाया॥ 213॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. केवलज्ञान प्रकट हो आया, चार घाति जब कर्म नशाया।
तीर्थङ्कर रवि उदित हुए हैं, भव्यों के मन मुदित हुए हैं॥ 214॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'के' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. नव देवों में प्रभु इक देवा, सुर नर इन्द्र करें तव सेवा।
भक्ति ही मेवा कहलाती, दुर्लभता से ही मिल पाती॥ 215॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. जगत गुरु हैं पार्श्व जिनेश्वर, सर्व जीव के हैं प्राणेश्वर।
मेरे प्राणनाथ तुम ही हो, लगता पल-पल साथ तुम्हीं हो॥ 216॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. लक्ष्मी नन्तचतुष्टय धारी, समवसरण की आभा न्यारी।
सर्व विश्व के श्रेष्ठ धनी हो, गुणवानों में ज्येष्ठ गुणी हो॥217॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. विधेर्विधानात् शिवमारग के, राग-द्वेष किञ्चित् नहीं जिनके।
पूर्णज्ञान से बुद्ध कहाते, ऐसे प्रभु को शीश झुकाते॥ 218॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धेर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. नर ही तीर्थङ्कर हो सकते, चार घाति का क्षय कर सकते।
छियालीस गुण को वे धारें, भव्यों को भव पार उतारें॥ 219॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. अनुनय विनय करूँ जगनामी, ज्ञान कक्ष मम आओ स्वामी।
योग्य नहीं कुछ नाथ चढ़ाने, आया हूँ तव दर्शन पाने॥ 220॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. रत्नराशि सब व्यर्थ लगी है, स्वयं चेतना जब जागी है।
अनन्त गुण रत्नाकर स्वामी, नमूँ झुका सिर अन्तर्यामी॥ 221॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. नम्र भावना से गुण गाए, गणधर मुनिजन ध्यान लगाए।
समवसरण में कब आ जाऊँ, दिव्यध्वनि सुन शिवसुख पाऊँ॥ 222॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रात-दिवस प्रभु धुन लागी है, निजानुभव की प्यास जगी है।
मनोभावना पूरी करिए, विघ्न भव्य-जन के प्रभु हरिए॥ 223॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. गुणराशिः गुणधर को नमते, रत्नराशि सुर अर्पण करते।
मैं क्या भगवन् भेंट चढ़ाऊँ, हाथ जोड़कर शीश झुकाऊँ॥ 224॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शिः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

सम्यक्त्वी गुण जान ही पावें, किन्तु प्रभु गुण गिन ना पावें।
कौन सिन्धु के रत्न गिने है, अर्घ्य चढ़ा हम मौन हुए हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं अनन्तगुणाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।